

भूलने में भलाई है

सारी दुनिया में ढूँढने पर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिले, जिसके जीवन में कभी कोई दुर्घटना न हुई हो, संकट और दुःखों का जिसे सामना न करना पडा हो . ऐसा भी कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा, जिसे जीवन में कभी कोई छोटी बड़ी गलती या भूल न की हो . यदि जीवन जीना अत्यंत सीधा और सरल होता या बने बनाए रसगुल्ले और हलूए की तरह होता, तो कोई भी उसे निमिष मात्र में हप कर सकता था और यदि सभी लोग इतने सम्पूर्ण होते, कि कोई गलती ही न करता, तो शायद पाप-पूण्य, ज्ञान, अज्ञान, ऊँच-नीच आदि का कोई भेद भी न होता. और फिर तो हर मानव परिपूर्ण ईश्वर ही बन जाता. इसलिए इस विषय पर हर पुरुषार्थी को विवेकपूर्ण चिंतन करने की आवश्यकता है.

यदि कोई स्त्री बार-बार यह स्मरण करती रहे, कि उसका शिशू सुन्दर और सलोना था. उसे, उसके प्राणों से अधिक प्रिय था परन्तु वह अमुक घटना में मृत्यु के प्राप्त हो गया था अथवा उसका पति तो सम्पूर्ण जीवन का साथी था, उसे ब्याहकर लाया था, परन्तु उसने तो उसके साथ बडा धोखा किया है, जीवन के संकट में उसे अकेला छोड दिया है आदि और यदि इस प्रकार सोचते हुए, उक्त दोनों ही स्त्रियाँ इस घटना का दोषी भाग्य को, ईश्वर को या अन्य किसी तीसरे व्यक्ति को बनाती है. और बार-बार जीवन के घटित एवं निश्चित सत्य को याद करती है, याद करके चिंता करती है, तो निश्चित ही यह बातें उसके सम्पूर्ण जीवन को नारकीय और दुःखमय बा देती है . ऐसी ही स्थिति उन व्यक्तियों की हो सकती है, जो अपने व्यापार में हुए घाटे या किसी दुर्घटा में हु शारीरिक क्षति या प्रियजन द्वारा हुए अपमा, पुरुषार्थ की असफलता आदि-आदि बातों को सोचकर बार-बार व्यथित और क्षुभित होते रहते है. "बिती का चिंतन उसी प्रकार है, जैसे साँप के निकल जाने पर लकीर को पीटना" या स्मशान में शवदाह करने के बाद मुड-मुड कर चिता की ओर देखना, क्योंकि न तो हाथ से निकल जाने के बाद साँप मारा जा सकता है और न ही दग्ध होने के बाद कोई जीवित होता है, बल्कि इसके संदर्भ में यह भी किवदंति है कि स्मशान से लौटते समय मुडकर देखना भूत और प्रेतों को अपने पीछे लगाना है, जो वस्तुतः उसे दुःख व पीडा ही देते हैं.

ईश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान के अनुसार व्यक्ति को यह निश्चय कर लेना चाहिए, कि सृष्टि की भली या बुरी हर घटना पूर्व निर्धारित है. अतः हमारे या दुसरो के साथ जो भी हो रहा है या होगा, उसमें कुछ भी नया नहीं है और ऐसा अनेक बार हुआ है. फिर किस बात की चिंता और कैसा दुःख? यह भी ईश्वरोक्त है, कि "जो होता है या होगा वह सब कल्याणकारी है" भले कि लिए है. अतः यह उचित होगा, कि हम किसी भी भूल या घटना में, हानि या पराजय में दुःखित और विचलित न हों, बल्कि हर भूल में भला सोचने का प्रयत्न करें तथा यह निश्चय करें, कि आज की पराजय निश्चय ही कल विजय में बदल जाएगी और मेरे निन्दक प्रशंसक बन जाएंगे. हमारी यह शुभ भावना व शुभचिंतन शत्रु को भी मित्र बना देंगे .

जब कोई मेरी निन्दा करता है, मेरी त्रुटि बताता है या मुझे क्षती पहुँचाता है, तो निश्चय ही यह मानिए कि यह मेरे ही किसी विचार की प्रतिध्वनी अथवा कर्म का प्रतिकर्म है और कि यह तो उसकी उदारता (विरोधी की) उदारता और उपकार ही है, जो मेरी निन्दा द्वारा या मेरी त्रुटि को प्रकाशित करके, वह मुझे सावधान कर देता है तथा आगे सुधार करने का अवसर प्रदान करता है. इसलिए ज्ञानवान और विचारवान वह है, जो दूसरो के द्वारा उपमानित, प्रताडित या निंदित किए जाने पर, उस व्यक्ति के प्रति दुर्भावना न ला. न ही प्रतिशोध की भावना से किसी बात या घटना की मन मे गाँठ बाँधकर बैठ जाए, बल्कि उसी क्षण जागृत होकर, वह आत्म विश्लेषण प्रारम्भ कर दे, कि मेरी अमुक भुल का कारण क्या है? मैं किस प्रकार से आत्मसुधार कर सकता हूँ तथा यह तो और ही अच्छा हुआ, जो किसी बड़ी घटना से पहले ही इस छोटी बात ने मुझे बड़ी क्षति से बचा लिया . ऐसा चिंतन हम तभी कर सकते है, जब हमारी बुद्धि में यह निश्चय हो, कि सृष्टि नाटक अविनाशी है, इसका हर घटनाक्रम अविनाशी है.

इस नाटक के सभी पात्रों का अभिनय अलग-अलग है. इसलिए व्यक्ति या परिस्थिती से परेशान न होते हुए सदा आत्मा के स्वमान में रहना है, दुःख में भी सुख का अनुभव करना है . "तुफान को तोहफा समझना है और भुल में भला देखना है और भला देखते हुए ही बीती बातों को भूला देना है, क्योंकि भूलने में ही भलाई है ."

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com